माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण तथा शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता वृद्धि पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

लालचंद राम*

यह सर्वविदित है कि माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी विषय पढ़ाया जा रहा है। पाठ्यक्रम भी निर्धारित है अर्थात् विद्यालयी शिक्षा में हिंदी अध्ययन-अध्यापन हेतु पाठ्यपुस्तकें भी निर्धारित की गई हैं। पढ़ने-पढ़ाने के लिए पाठ्यपुस्तकें एक प्रमुख साधन अथवा स्रोत होती हैं। इसलिए हिंदी पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता क्या है? और उसके शिक्षण-अधिगम को गुणवत्तापूर्ण कैसे बनाया जाए, इस संदर्भ में एक शोध कार्य किया गया। इस शोध का प्रमुख कारण यह था कि मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश दोनों राज्यों में विगत कई वर्षों से माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर की बोर्ड परीक्षाओं में अधिकतर विद्यार्थी हिंदी विषय की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो रहे थे। यह राष्ट्रीय चिंता का विषय रहा। अतः यह शोध कार्य उसी चिंता का समाधान खोजने के लिए किया गया। यह शोध पत्र भी इसी शोध परियोजना पर आधारित है।

इस शोध कार्य में विद्वान विषय-विशेषज्ञ, विषय के शिक्षक तथा विद्यार्थियों के सुझाव लिए गए। ये सुझाव मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के शिक्षकों तथा कक्षा 10 व 12 के 1,034 विद्यार्थियों से प्राप्त किए गए। शिक्षक तथा विद्यार्थी जो इस शोध में शामिल थे, उनमें 12 केंद्रीय विद्यालय, दोनों राज्यों के 24 सरकारी विद्यालय (बालक और बालिका), 12 अर्द्धसरकारी अथवा वित्तपोषित विद्यालय तथा 12 निजी विद्यालय शामिल थे। इस शोध परियोजना में शामिल न्यादर्श से माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक निर्माण तथा हिंदी शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता वृद्धि संबंधी प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष चर्चा कर प्राप्त जानकारी एवं सुझावों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया। इसी गुणात्मक विश्लेषण के आधार पर पाठ्यपुस्तक में भाषायी दक्षता या कौशल संबंधी सुझाव, हिंदी अध्ययन-अध्यापन संबंधी सुझाव, पाठ्यपुस्तक में दिए जाने वाले प्रश्न-अभ्यास संबंधी सुझाव, हिंदी भाषा साहित्य के मूल्यांकन संबंधी सुझाव, हिंदी अध्ययन-अध्यापन के समय सूचना एवं संचार तकनीक (आई.सी.टी.) के उपयोग संबंधी सुझाव तथा पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता संबंधी व्यापक सुझाव दिए गए हैं।

*प्रोफ़ेसर, भाषा शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली 110016

© NCERT not to be republished

किसी भी कक्षा के लिए कोई भी पाठ्यपुस्तक आदर्श नहीं हो सकती है। यह शिक्षक का दायित्व है कि वह सीखने वाले और अध्ययन सामग्री के बीच संतुलन बनाए रखे तथा उसमें अध्ययन सामग्री के निर्माण से लेकर अध्ययन सामग्री की उपलब्धता तक बच्चों के स्तर के अनुरूप ढालने की क्षमता हो। पाठ्यपुस्तकों के पक्ष में शिक्षाविदों एवं भाषाविदों का कहना है कि यह एक तरह की संगति एवं क्रमिकता लिए होती है तथा विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों के लिए एक निर्धारित समय-सीमा में लक्ष्य प्राप्त करने की अध्ययन सामग्री प्रस्तुत करती है, जबकि कई शोधार्थियों का मानना है कि सभी विद्यार्थियों की ज़रूरतें एक ही तरह की नहीं होती हैं, अतः पाठ्यपुस्तकें इन विविधताओं को नज़रअंदाज़ कर एकसमान पाठ्यक्रम को जबरन लादती हैं और शिक्षकों को अपनी तरफ़ से किसी भी तरह का निर्णय लेने के अधिकार को छीनती हैं (ऑलराइट, 1981; लिटिलजॉन, 1992; हचिंसन और टोरेस, 1994)।

प्राथमिक स्तर और उससे पूर्व भाषा की पाठ्यपुस्तकें अधिक गंभीरता व संवेदना से लिखने की आवश्यकता है। इन्हें संदर्भपरक स्तर पर समृद्ध और सीखने वाले की रचनात्मकता को उचित चुनौती देने वाला होना चाहिए। इनमें केवल कविताएँ व कहानियाँ नहीं, बल्कि विधाओं एवं विषयों के एक बड़े फलक को होना चाहिए। साथ ही ऐसे अभ्यास प्रश्न भी होने चाहिए, जिनमें अत्यंत सूक्ष्म अवलोकन व विश्लेषण की आवश्यकता पड़े और जो अंततः मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति के सौंदर्यपरक संश्लेषण की ओर अग्रसर करे। उदाहरण के लिए, नक्शे व डिज़ाइन पाठ्यपुस्तकों के अभिन्न अंग होते हैं। पाठ्यपुस्तक लेखकों, नक्शे अथवा खाका बनाने वाले पेशेवरों और चित्र प्रस्तुत करने वालों को शुरू से ही एक साथ काम करना चाहिए और इस समूह के एक छोटे से दल को पाठ्यपुस्तक उत्पादन के साथ जुड़ जाना चाहिए। वस्तुतः भाषा, सोच और संस्कृति के बीच के संबंध को उद्घाटित करती है। सभी प्रकार के तकनीकी प्रयासों के बावजूद भी हम जानते हैं कि वस्तुतः साधारण बच्चे के लिए सीखने के स्रोत के रूप में पाठ्यपुस्तक ही प्रमुख स्रोत बनी रहेंगी। इसलिए यह ज़रूरी है कि इसे बहुत ही ध्यान से बनाया जाए। पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया में विद्यार्थी और शिक्षकों के साथ लगातार चर्चा होती रहनी चाहिए। प्रतिपुष्टि की व्यवस्था विकसित कर हम पाठ्यपुस्तकों में लगातार सुधार ला सकते हैं (*भारतीय भाषाओं का शिक्षण,* राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र, पृष्ठ संख्या 24)।

शोध परियोजना का औचित्य

इस शोध परियोजना का आधार भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र तथा मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश, दोनों राज्यों में विगत वर्षों में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर की बोर्ड परीक्षाओं में अधिकतर विद्यार्थियों का हिंदी विषय में कमज़ोर निष्पादन होना था और अतः यह शोध कार्य उसी चिंता का समाधान खोजने के लिए किया गया, जिसमें शोधार्थी द्वारा उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर की हिंदी भाषा साहित्य के शिक्षण की यथास्थिति का पता लगाने, पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता की जाँच करने तथा हिंदी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति को

विद्यार्थियों, शिक्षकों की दृष्टि से परखने तथा हिंदी विषय के प्रति अध्यापकों अथवा विद्यार्थियों की धारणा या सोच को जानने, समझने, परखने तथा उसका आकलन करने की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण शोध परियोजना ली गई थी। यह परियोजना दो वर्ष छह माह (वर्ष 2017 से 2019) तक चली। इस शोध परियोजना में दो प्रदेशों (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश) के छह ज़िलों तथा उनके कुल 60 विद्यालयों (प्रत्येक ज़िले के 10 विद्यालय) को शामिल किया गया था। जिसमें शोध अध्ययन के लिए प्रत्येक ज़िले से यादृच्छिक रूप से दो केंद्रीय विद्यालय, चार सरकारी विद्यालय, जिसमें जी.आई.सी. (शासकीय इंटर कॉलेज), जी.जी.आई.सी. (शासकीय बालिका इंटर कॉलेज) अनिवार्य रूप से शामिल थे तथा दो निजी विद्यालय और दो सरकार द्वारा वित्तपोषित विद्यालय चयनित किए गए थे। चयनित ज़िले फ़ैज़ाबाद, बरेली और झाँसी (उत्तर प्रदेश) तथा ग्वालियर, होशंगाबाद और उज्जैन (मध्य प्रदेश) थे। प्रत्येक विद्यालय के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापन कर रहे शिक्षकों की राय ली गई। सभी विद्यालयों से यादृच्छिक रूप से 10 माध्यमिक स्तर, 10 उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की राय भी ली गई। जिसमें शिक्षक किस तरह की पाठ्यपुस्तक पढ़ा रहे हैं? वे किस तरह की पाठ्यपुस्तक पढ़ाना चाहते हैं? उनकी पाठ्यपुस्तक संबंधी क्या ज़रूरतें हैं? विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तक संबंधी क्या-क्या ज़रूरतें हैं? विद्यार्थियों और शिक्षकों की दृष्टि से हिंदी अध्ययन-अध्यापन कैसा हो रहा है और कैसा होना चाहिए? के बारे में राय ली गई।

शोध परियोजना के उद्देश्य

वस्तुत: पाठ्यपुस्तक के निर्माण में शोध का बहुत बड़ा योगदान होता है। यह शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में पढ़ या पढ़ा रहे हिंदी के विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों पर केंद्रित है। उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश दोनों हिंदी प्रदेश हैं। दोनों में खान-पान, रहन-सहन, वेष-भूषा, पर्व, त्यौहार रीति-रिवाज, भाषा-बोली अर्थात् सांस्कृतिक एकता है। चूँकि दोनों प्रदेशों में मातृभाषा हिंदी है और हिंदी अध्ययन-अध्यापन की समृद्ध परंपरा रही है।

भूमंडलीकरण, सार्वभौमीकरण तथा उत्तर आधुनिक युग के बदलते समय एवं परिवेश में दोनों प्रदेशों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति क्या है? माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन किस प्रकार हो रहा है? शिक्षक एवं विद्यार्थियों की हिंदी के प्रति क्या धारणा है? हिंदी के बारे में वे क्या सोचते हैं? हिंदी अध्ययन-अध्यापन को लेकर उनकी अपेक्षाएँ क्या हैं? साथ ही हिंदी भाषा को लेकर उनकी ज़रूरतें क्या हैं? चुनौतियाँ क्या हैं? उन चुनौतियों को दूर करने के उपाय क्या हैं? विद्यार्थी हिंदी भाषा के परिवेश में पैदा होता है। पढ़ता-लिखता है। उसकी मातृभाषा भी हिंदी है, उसके बावजूद माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति बहुत सराहनीय नहीं है। इसके क्या कारण हैं? जो पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थी पढ़ रहा है, क्या वह उससे संतुष्ट है? या वह उसमें परिवर्तन चाहता है? पाठ्यपुस्तक के बारे में उनकी क्या राय है? वह अध्यापक, जो वर्षों से हिंदी अध्ययन-अध्यापन से जुड़े हुए हैं, हिंदी की पाठ्यपुस्तकें पढ़ा रहे हैं,

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तकों के बारे में उनकी क्या राय है? वे किस प्रकार की हिंदी की पाठ्यपुस्तकें पढ़ाना चाहते हैं? शिक्षक-प्रशिक्षक जो हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षण दे रहे हैं, हिंदी भाषा के बारे में उनकी क्या राय है? हिंदी की पाठ्यपुस्तकों के बारे में उनकी क्या राय है? वे क्या सोचते हैं? शिक्षक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में शिक्षकों की क्या राय है? हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन के माध्यम से रचा जाने वाला संसार कैसा है और कैसा होना चाहिए? हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन की स्थितियाँ जीवंत और सराहनीय नहीं हैं तो इसके प्रमुख कारण क्या हैं? इत्यादि के बारे में पता लगाना इस अध्ययन के उद्देश्य थे।

हिंदी पढ़ या पढ़ा रहे शिक्षकों को प्रशिक्षण कैसे दिया जा रहा है? उसकी गुणवत्ता क्या है? उसमें परिवर्तन की गुंजाइश है या नहीं? या वही पुराना ढर्रा अपनाया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान कौन-सी शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रिया का पालन किया जा रहा है, कौन-सी प्रविधि काम कर रही है? बदलते हुए समय, परिस्थितियों के अनुसार शिक्षाशास्त्रीय प्रविधि अपनाई जा रही है या नहीं? वह शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रिया हिंदी अध्ययन-अध्यापन के प्रति सकारात्मक माहौल पैदा करने के लिए सक्षम है या नहीं? क्या प्रशिक्षण के दौरान अध्ययन-अध्यापन की कोई नई तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है अथवा नहीं? या उस तकनीक से हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन को प्रोत्साहन मिल रहा है या नहीं?

समय-समय पर नई पाठ्यपुस्तकों के कक्षा में प्रयोग किए जाने के तरीके बदलते रहे हैं, पढ़ने-पढ़ाने का ढंग भी बदलता रहा है। वह बदलाव हिंदी भाषा शिक्षण को बढ़ावा दे रहा है या उदासीनता का माहौल तैयार कर रहा है? अपेक्षित परिवर्तन कक्षा तक पहुँच रहा है कि नहीं? विद्यार्थी उसका लाभ ले रहा है या नहीं? आई.सी.टी. का प्रयोग या फिर विषय-वस्तु आधारित दृश्य-श्रव्य सामग्री के बारे में विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों की क्या राय है? आदि अनेक मुद्दे इस शोध के केंद्र में हैं। शोध के कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं—

- हिंदी के संदर्भ में भाषा शिक्षण संबंधी शिक्षा नीति के बारे में शिक्षकों एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों की क्या धारणा या राय अथवा सोच है?
- माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पढ़ाई जा रही हिंदी पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता के प्रति विद्यार्थी, शिक्षक, शिक्षक-प्रशिक्षक की क्या धारणा या राय अथवा सोच है?
- हिंदी भाषा शिक्षण में शैक्षिक प्रक्रिया के नियोजन हेतु माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों की क्षमता और माँग क्या है?
- हिंदी भाषा शिक्षण में आई.सी.टी. के प्रयोग को समेकित करने के लिए माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों की क्षमताओं का विकास कैसे करें?
- हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षमता निर्माण कार्यक्रम में शिक्षक किस प्रविधि, पद्धति और प्रारूप को वरीयता अथवा प्राथमिकता देते हैं?
- हिंदी के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति और शिक्षाशास्त्रीय तकनीक की मूल्यांकन रणनीति के लिए माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों की अपेक्षाओं की विश्लेषणात्मक क्षमता क्या है?
- हिंदी अध्यापकों और उनकी शिक्षा रणनीति के प्रति माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर

© NCERT not to be republished

के विद्यार्थियों की क्या धारणा या राय अथवा सोच है?

- व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और उच्च शिक्षा में हिंदी भाषा के प्रति माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की क्या धारणा या राय अथवा सोच है?
- विभिन्न संस्थाओं और संगठनों द्वारा आयोजित हिंदी क्षमता विकास कार्यक्रम के प्रति शिक्षकों की क्या धारणा या राय अथवा सोच है?
- माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भाषा की कक्षा में शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रिया के कार्यान्वयन में शिक्षक किस प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करते हैं?
- पाठ्यपुस्तक कैसी होनी चाहिए? उसकी पाठ्यवस्तु कैसी होनी चाहिए? उसकी विषय-वस्तु कैसी होनी चाहिए? उसका स्तर कैसा होना चाहिए? यह शोध से ही पता चलता है। इस उद्देश्य से यह शोध कार्य अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

शोध परियोजना के आधार पर सुझाव

इस शोध परियोजना में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में पढ़ या पढ़ा रहे हिंदी के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक निर्माण तथा हिंदी शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता वृद्धि संबंधी प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष चर्चा कर प्राप्त जानकारी एवं सुझावों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया। इसी गुणात्मक विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित बिंदुओं पर व्यापक सुझाव दिए गए हैं—

- पाठ्यपुस्तक में भाषायी दक्षता अथवा कौशल संबंधी सुझाव।
- हिंदी अध्ययन-अध्यापन संबंधी सुझाव।
- पाठ्यपुस्तक में दिए जाने वाले प्रश्न-अभ्यास संबंधी सुझाव।
- हिंदी भाषा साहित्य के मूल्यांकन संबंधी सुझाव।
- हिंदी अध्ययन-अध्यापन के समय सूचना एवं संचार तकनीक (आई.सी.टी.) के उपयोग संबंधी सुझाव।
- पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता संबंधी सुझाव।

शिक्षकों की राय और सुझाव के साथ ही जो लक्षित समूह हैं या जो पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के लिए तैयार की जाती है, उसे प्रयोगकर्ता अर्थात् माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी एवं हिंदी कक्षा अध्ययन-अध्यापन संबंधी सुझाव भी लिए गए थे।

माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक निर्माण तथा हिंदी शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता वृद्धि संबंधी शिक्षकों के सुझाव

पाठ्यपुस्तक में भाषायी दक्षता कौशल अथवा संबंधी सुझाव

भाषा-साहित्य की पाठ्यपुस्तक में भाषा के सभी कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एवं चिंतन) का विकास संदर्भित होना चाहिए। माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक कक्षा स्तर ऐसा स्तर है, जहाँ से विषयों का चुनाव प्रारंभ होता है। कौन-सा विद्यार्थी किस धारा की ओर जाएगा (गणित-विज्ञान

© NCERT not to be republished

या सामाजिक विषय की ओर) वह यहीं से तय होता है। भाषायी पृष्ठभूमि में कमज़ोर विद्यार्थी विषय में भी कमज़ोर होगा, इसलिए इस स्तर पर भाषा-साहित्य की पुस्तकों का दायित्व है कि उसमें भाषा-कौशलों के विकास का भरपूर अवसर हो। माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मनोवांछित विषय पर अपने विचार सुस्पष्टता के साथ रख सके, भाषा के सभी कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एवं चिंतन) का विकास सुनिश्चित कर सके। समझ के साथ सभी कौशलों की अभिव्यक्ति क्षमता का विकास कर सके, चिंतन कर सके आदि।

यह तभी संभव है जब पाठ्यपुस्तक में यह सब करने का स्रोत और अवसर उपलब्ध हो। भाषा की पाठ्यपुस्तक में भाषायी दक्षता संबंधी अभ्यास और गतिविधियाँ होने से ही विद्यार्थी को वह सब करने और करके सीखने का अवसर मिलेगा। शिक्षक पाठ संबंधी प्रदत्तकार्य एवं गतिविधियाँ स्वयं सुझा सकते हैं, इसलिए भाषा-साहित्य की पाठ्यपुस्तक को स्रोत के रूप में विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तक निर्माताओं को भाषा के कौशलों को सीखने-सिखाने संबंधी अभ्यास, गतिविधि, योग्यता-विस्तार आदि का प्रावधान करना ज़रूरी है। शिक्षकों की पाठ्यपुस्तकों में भाषायी दक्षता अथवा कौशल संबंधी विचार इस प्रकार हैं—

- हिंदी की बोलियों की रचनाओं को भी शामिल करना चाहिए, पर ये रचनाएँ सुगम और बोधगम्य हों।
- अन्य भारतीय भाषाओं के अच्छे अनुवादक रखें जाएँ तथा बहुभाषाविज्ञ रचनाकारों को बढ़ावा दिया जाए।
- प्रश्न-अभ्यास या योग्यता-विस्तार के अंतर्गत ऐसी गतिविधियाँ रखी जानी चाहिए, जिनके माध्यम से विद्यार्थी श्रवण, वाचन, लेखन एवं पढ़ने के कौशलों का विकास कर सके।
- भाषायी कौशल को ध्यान में रखते हुए ऐसे पाठों का चयन किया जाना चाहिए, जिनमें आँचलिकता का समावेश हो।
- पाठ्यपुस्तक में हिंदी के साथ-साथ अन्य विषयों पर आधारित एकीकृत पाठ हों।
- पाठ्यपुस्तक में दिव्यांग विद्यार्थियों, जाति, धर्म, जेंडर आदि की समानता स्थापित करने वाले पाठ हों।
- पाठ्यपुस्तकों में ऐसे पाठ शामिल हों, जिनमें भाषायी कौशल—सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना व चिंतन करना का क्रमबद्ध विकास हो सके।
- हिंदी व्याकरण को पाठ्यसामग्री में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए, जैसे— संधि, समास, अलंकार, क्रियाभेद, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, प्रतिवेदन, उपसर्ग, प्रत्यय, वर्ण-विन्यास आदि पाठ एवं प्रश्न होने चाहिए। नए शब्दों की खोज, उनके अर्थ के लिए समानार्थी, पर्यायवाची, विलोम आदि शब्द दिए जाने चाहिए।
- अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं के भी एक-दो पाठ पाठ्यक्रम में शामिल करने चाहिए ताकि विद्यार्थियों का शब्द भण्डार और अधिक समृद्ध हो।
- पाठ्यपुस्तक में भाषा की बात, कॉलम में व्यावहारिक व्याकरण से संबंधित प्रश्न तथा व्याकरण की सामान्य जानकारी से संबंधित प्रश्न अवश्य होने चाहिए।

© NCERT not to be republished

- प्रश्न निर्माण, शब्द निर्माण, नए शब्दों की खोज आदि से संबंधित प्रश्न भी होने चाहिए।
- पढ़ना-लिखना, सुनना एवं बोलना, भाषा के चारों कौशलों के विकास हेतु वर्ण विचार, उच्चारण स्थान, सही मात्रा, व्याकरणिक ज्ञान आदि होना आवश्यक है। अत: पाठ के अंत में इस पर भी प्रश्न दिए जाने चाहिए ताकि चिंतन कौशल विकसित हो सके।
- आलेख तथा फ़ीचर प्रत्येक पाठ से संबंधित हो।
- पाठ्यपुस्तक में पत्र एवं निबंध लेखन को भी शामिल किया जाना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में भाषा सारगर्भित, बोधगम्य एवं सरल होनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में विषय-वस्तु के अनुसार सार्थक ऑडियो-वीडियो का लिंक या क्यू आर कोड देना चाहिए। साथ ही, आवश्यक ऑनलाइन स्रोतों की भी जानकारी देनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक की भाषा दैनिक जीवन तथा परिवेश से जुड़ी तथा बोधगम्य होनी चाहिए।
- थोड़ा बहुत सभी भाषाओं के शब्द होने चाहिए।
- हिंदी प्रश्नोत्तरी विशेषकर व्याकरण संबंधी प्रश्नोत्तर के लिए वर्ग पहेली का निर्माण करना चाहिए।
- संवाद, वाद-विवाद, तात्कालिक आशु भाषण, प्रश्नोत्तरी निर्माण आदि विधाओं से संबंधित रचनाओं को शामिल करना चाहिए।
- कठिन शब्दों को बोल्ड करके उनका अर्थ उसी पृष्ठ पर दिया जाए, जिस पृष्ठ पर वह शब्द आए हों।
- सृजनात्मक गतिविधियों का समावेश होना चाहिए।
- आधुनिक विषयों और शब्दों को पाठ्यपुस्तक में जगह देनी चाहिए।

हिंदी अध्ययन-अध्यापन संबंधी सुझाव

पाठ्यपुस्तक चाहे जितनी बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण हो जब तक उसका अध्ययन-अध्यापन ठीक से नहीं होगा तब तक उसका लक्ष्य पूरा नहीं होगा। अच्छी पाठ्यपुस्तक की खूबी यह होती है कि विद्यार्थी स्वत: उसे पढ़कर समझ सकें। यदि कुछ कठिनाई आती है तो वह अपने बड़ों, वरिष्ठों तथा शिक्षकों की मदद से समाधान खोज सकते हैं। पाठ्यपुस्तक बेशक बहुत गुणवत्तापूर्ण हो, अगर शिक्षक, प्रशिक्षित नहीं हैं, पुस्तक को कक्षा में पढ़ाने की रुचि नहीं है या फिर उसकी बेहतर तैयारी या समझ नहीं है तो उसका अध्ययन-अध्यापन दु:खद, ऊबाऊ और कठिन होगा। अध्ययन-अध्यापन के तौर-तरीकों में बहुत बदलाव आया है, अब सूचना एवं संचार तकनीक (आई.सी.टी.) का उपयोग होने लगा है। ऑडियो, वीडियो, कंप्यूटर तथा मोबाइल एवं टीवी का प्रयोग हिंदी-शिक्षण में होने लगा है। अतः शिक्षक को उनका कक्षा में प्रयोग किस स्तर तक हो रहा है, कैसे हो रहा है—उसके प्रति सजग रहना होगा।

शिक्षक-विद्यार्थी सही सूचना को कैसे संग्रह करें? और सूचनाओं के ढेर से ज्ञान का संचय कैसे करें? उसे व्यवहार में कैसे उतारें? यह चुनौती तो आ रही है, इसलिए शिक्षक की ज़िम्मेदारी है कि विद्यार्थियों को आई.सी.टी. का प्रयोग करते-कराते समय उसके लाभ-हानि तथा सदुपयोग-दुरुपयोग के बारे में बताएँ। इस बात का ध्यान रखें कि कहीं इन प्रयोगों की अधिकता से चिंतन क्षमता और सोचने-समझने की क्षमता या फिर मौलिकता का अभाव तो नहीं हो रहा है? आखिर मातृभाषा हिंदी

© NCERT not to be republished

पढ़ने वाला विद्यार्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण क्यों हो रहा है? विद्यार्थी, हिंदी शिक्षण के प्रति उदासीन क्यों हो रहा है? यह चिंता का विषय है। सूचना क्रांति के बाद भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण के लाभ कुछ लोगों को हुए होंगे, किंतु कुछ चीज़ें नष्ट भी हुई हैं। भाषा, समाज और संस्कृति के क्षेत्र में बिखराव और गिरावट भी बहुत आई है। अंग्रेज़ी के वर्चस्व से भारतीय भाषाओं समेत हिंदी कमज़ोर हुई है। बोलने वालों की संख्या या शैक्षिक स्तर पर पंजीकरण अवश्य बढ़ा है, किंतु उसका आधार कमज़ोर हो रहा है। मातृभाषाओं का अध्ययन-अध्यापन हाशिए पर चला गया है। रोज़ी-रोटी से मातृभाषाएँ जुड़ नहीं पा रही हैं। यह सिर्फ़ अस्मिता और पहचान बनकर रह गई हैं। सवाल है कि जब वे बचेंगी तभी वह विकास करेंगी।

हिंदी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। लोगों में पढ़ने की आदत कम हो गई है। मिलने-जुलने, संवाद करने का अवसर कम हो रहा है, परिवार एकाकी होते जा रहे हैं। सामाजिक स्तर पर भी सामूहिकता सिकुड़ती जा रही है। हिंदी भाषा हिंदी समाज से थी। वह समाज अपने आचार-व्यवहार में बदल रहा है। अपनी दुनिया संकुचित कर रहा है। ऐसी स्थिति में हिंदी अध्ययन-अध्यापन सुचारु कैसे रहेगा? हम तमाम संकीर्णताओं को छोड़ने को तैयार नहीं हैं। अपना आदर्श बदल रहा है। वह अंग्रेज़ी और विज्ञान, गणित तथा इंजीनियरिंग, मेडिकल आदि से प्रतिस्पर्धा कर रहा है और हिंदी को न्यूनतम आँक रहा है, किंतु भाषायी दक्षता के बिना विषय की दक्षता हासिल नहीं कर सकते, इसलिए भाषा सीखना-सिखाना प्रभावी कैसे हो, यह देखा जाना अनिवार्य है। शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा हिंदी अध्ययन-अध्यापन किस प्रकार बेहतर किया जाए, इस संबंध में हिंदी शिक्षकों के हिंदी अध्ययन-अध्यापन संबंधी सुझाव इस प्रकार हैं—

- हिंदी अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण के गुणवत्तापूर्ण शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- अध्यापकों को कक्षाध्यापन हेतु सूचना एवं तकनीकी साधनों के एकीकरण के लिए गहन प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- आधुनिक शोधों, जैसे— क्रियात्मक शोध, कक्षा निरीक्षण शोध आदि को भी भाषा तथा साहित्य शिक्षण की प्रविधियों में शामिल किया जाना चाहिए।
- हिंदी भाषा तथा साहित्य शिक्षण में ई-अध्ययन सामग्री (ई-कंटेंट) का उत्पादन एवं उपयोगिता के संदर्भ में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा आवश्यक सामग्री का राष्ट्रीय स्तर पर निर्माण कर हिंदी अध्यापकों को उपलब्ध कराना चाहिए।
- समाजशास्त्रीय दृष्टि, आधुनिक शिक्षाशास्त्र एवं शिक्षण-विधि से संबंधित प्रशिक्षण का आयोजन करना चाहिए।
- अध्यापक को योजनाबद्ध ढंग से निश्चित, प्रेरक और रुचिकर तथा संदर्भित वातावरण से संबंधित उपयुक्त उदाहरणों से पढ़ाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में अभिरुचि पैदा हो एवं हिंदी विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा हो।
- सामाजिक घटनाओं और स्थितियों से जोड़कर पाठों की व्याख्या की जानी चाहिए।
- विद्यार्थियों को विषय पर बोलने एवं लिखने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए।

© NCERT not to be republished

- स्कूलों में समय-समय पर विषयों से संबंधित विशेषज्ञों को आमंत्रित करने और संवाद करने की व्यवस्था होनी चाहिए।
- साहित्य आधारित मंचन, गायन या फ़िल्मों के प्रदर्शन भी करने चाहिए, जिसके आधार पर सकारात्मक परिणाम मिल सकें।
- पाठों के चयन में बाल मनोविज्ञान एवं विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकता का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- काव्यात्मक शैली का प्रयोग न करके प्रश्नोत्तर और क्रियाकलाप विधि का प्रयोग करना चाहिए।
- अच्छे अर्थ बोध के लिए कठिन शब्दों का अर्थ बताएँ-लिखवाएँ, तत्पश्चात् भावबोध कराएँ।
- कठिन भागों को चित्रपट की मदद से समझाया जा सकता है। व्याकरण पर छोटी-छोटी फ़िल्में बनाकर उन्हें कक्षा में दिखाकर सरल रूप से समझाया जा सकता है। रस, संधि, समास को भी इसी तरह पढ़ाया जा सकता है।
- प्रत्येक अध्यापक का नए पाठ्यक्रम के अनुसार प्रशिक्षण अवश्य हो।
- शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा हो।
- वर्तमान जन-जीवन व प्रचलित अवधारणाओं का ज्ञान दिया जाना चाहिए।
- आई.सी.टी. का भी प्रयोग होना चाहिए तथा इसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- कविता पढ़ाते समय उचित आरोह-अवरोह के साथ कविता का सस्वर वाचन करना चाहिए। तत्पश्चात् विद्यार्थियों से भी सस्वर वाचन कराएँ। शब्दार्थ एवं भावार्थ बताएँ। बोधगम्य प्रश्न पूछें।
- श्रुत लेखन एवं मौखिक वाचन के द्वारा विद्यार्थियों की कमज़ोरी के स्रोत का पता लगाएँ और उसे यथासंभव दूर करने का प्रयास करें। प्रश्नाभ्यास भी कराएँ।
- पाठ को प्रारंभ करने से पूर्व पाठ की विषय-वस्तु, लेखक-परिचय आदि के बारे में संक्षिप्त रूप से मौखिक जानकारी देकर पाठ के प्रति रुचि एवं जिज्ञासा जाग्रत करें।
- विद्यार्थियों को भावाभिव्यक्ति के पूर्ण अवसर प्राप्त होने चाहिए।
- कवियों एवं लेखकों के चित्र एवं उनकी रचनाओं के पोस्टरों की प्रदर्शनी होती रहनी चाहिए।
- विषय-वस्तु को वर्तमान सामाजिक परिवेश से जोड़कर पढ़ाना चाहिए।
- एकांकी एवं कहानी का मंचन द्वारा अध्यापन कराना चाहिए।
- व्याकरण समझाने के पश्चात् उसका पर्याप्त अध्यापन होना चाहिए।
- शब्द-भंडार बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए।
- भाषा-लेखन शुद्ध एवं व्याकरण सम्मत होना चाहिए।
- हिंदी वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण के उच्चारण का ज्ञान विद्यार्थियों को कराना आवश्यक है।
- ऑनलाइन सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- तुलनात्मक अध्ययन कराना चाहिए।
- मौन वाचन पर ज़ोर देना चाहिए।
- गद्यांश-पद्यांश को बोधगम्य बनाने की ज़रूरत है।

© NCERT not to be republished

- विषय-वस्तु के विस्तार की अपेक्षा गुणवत्ता पर बल देना चाहिए।
- विद्यार्थियों और अध्यापकों को पाठ के बारे में अपने सुझाव देने हेतु पाठ के अंत में कुछ रिक्त स्थान देना चाहिए।
- खेल विधि को अपनाया जाए।
- व्यावहारिक शिक्षा का अधिक प्रयोग होना चाहिए।
- अधुनातन शोधों एवं प्रविधियों को उचित शिक्षक-प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों को अवगत करवाना चाहिए।
- अध्यापकों को अद्यतन साहित्य से परिचित करवाने के लिए 'वर्कशाप' या 'ओरिएंटेशन' कोर्स आदि का समय-समय पर आयोजन किया जाना चाहिए।
- रचनात्मक क्रियाकलापों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को पढ़ाने के बजाय सीखने पर बल देना चाहिए। इसका एकमात्र तरीका है कि विद्यार्थी में साहित्य के प्रति रुझान पैदा किया जाए और उसे संवेदनशील बनाया जाए।
- विद्यार्थी को परिवेश से जोड़ना होगा, भाषा का ज्ञान कराना होगा। शब्द भंडार का विकास कराना होगा।
- शिक्षक को वर्तमान घटनाओं, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य और नवीनतम तकनीक से जुड़ना चाहिए।
- विधाओं के अनुरूप कक्षा में प्रस्तुति हो।
- विविध विषयों पर बाल गोष्ठी, निबंध प्रतियोगिता, मासिक परीक्षा, अंत्याक्षरी, भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ आदि होनी चाहिए।
- विद्यार्थियों को पुस्तकालय का भरपूर उपयोग के लिए प्रेरित करें।
- पत्र-पत्रिकाएँ एवं समसामयिक घटनाओं की जानकारी दी जानी चाहिए।
- रचनावादी विधि को बढ़ाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मक क्षमता का विकास हो।
- मानक भाषा का प्रयोग अध्ययन-अध्यापन में करना चाहिए।
- विद्यालय में हिंदी दिवस मनाना चाहिए।
- कक्षा में भयमुक्त वातावरण उत्पन्न किया जाए, जिसमें विद्यार्थी विषय को अच्छी तरह समझ सकें।
- हिंदी अध्ययन-अध्यापन के लिए कुछ प्रयोगात्मक कार्य, जैसे— नाटक मंचन, कविता सार, पोस्टर बनवाना, अंत्याक्षरी आदि का आयोजन भी सम्मिलित किए जाएँ।
- विद्यार्थियों की विशेष उपलब्धि पर उन्हें प्रोत्साहित अथवा पुरस्कार देना चाहिए।
- शिक्षक एवं विद्यार्थियों के बीच सहयोगात्मक भावना का निर्माण किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में शिक्षण कक्ष होना चाहिए जहाँ हिंदी भाषा के कवियों के चित्र हों, प्रोजेक्टर लगा हो, जिससे वहाँ कंप्यूटर की सहायता से शिक्षण भी किया जा सके।
- वेब पोर्टल की सामग्री भी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जाए।

पाठ्यपुस्तक में दिए जाने वाले प्रश्न-अभ्यास संबंधी सुझाव

प्रत्येक पाठ के साथ प्रश्न-अभ्यास दिए गए हैं। कुछ पाठों में प्रश्नों की संख्या अलग-अलग हो सकती है।

© NCERT not to be republished

प्रश्नों के प्रकार अलग-अलग हो सकते हैं। मूलत: प्रश्न-अभ्यास पाठ को प्रारंभ करने, उसकी समझ का विकास करने तथा भाषा की गुत्थियों को सुलझाने का काम करते हैं। विद्यार्थियों की योग्यता का विस्तार करने, गतिविधियाँ करने तथा प्रोजेक्ट कार्य करने का अवसर भी प्रदान करते हैं। प्रश्न-अभ्यास पाठ में दिए गए शिक्षण संकेत या विषय-वस्तु की बारीकियों को खोलने का काम करते हैं। स्वयं करके सीखने या पढ़ाए हुए को प्रश्न-अभ्यास के माध्यम से समझने तथा उसका सुदृढ़ीकरण करने और नया कुछ सोचने-जोड़ने और विस्तार करने का अवसर देते हैं। पूर्व ज्ञान और अनुभव के आलोक में उसे जाँचने का अवसर भी देते हैं। शिक्षकों द्वारा पाठ्यपुस्तकों में दिए जाने वाले प्रश्न-अभ्यास संबंधी सुझाव इस प्रकार हैं—

- प्रश्न-अभ्यास रटंत प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाले नहीं होने चाहिए।
- प्रश्न, विद्यार्थियों की तार्किकता एवं चिंतनशीलता को बढ़ाने वाले होने चाहिए।
- प्रश्नों का क्रम हमेशा सरल से कठिन की ओर होना चाहिए।
- हमेशा संभावनापूर्ण उत्तर वाले (अर्थात् जिनके अलग-अलग दृष्टियों में वैकल्पिक उत्तर हो सकें।) प्रश्नों को अधिकतम स्थान दिया जाना चाहिए।
- प्रश्नों को समाजशास्त्रीय सोच के आधार पर बनाया जाना चाहिए।
- प्रश्नों की संख्या सीमित हो तथा भाषा सरल हो।
- प्रश्न, विद्यार्थियों को तर्कशील बनाने वाले हों।
- पाठ में बहुविकल्पीय, लघुउत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न होने चाहिए।
- प्रश्न-अभ्यास के अंतर्गत ऐसी गतिविधियाँ भी दी जानी चाहिए, जिनसे विद्यार्थी कक्षा में प्राप्त अनुभवों को बाहर की दुनिया से जोड़ सकें।
- प्रश्न-अभ्यास में ऐसे प्रश्न शामिल करने चाहिए, जिनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं सोच-समझकर दे सकें।
- प्रश्न, विषय-वस्तु एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल हों।
- भाषा-अध्ययन में विषय-वस्तु (पाठ) से संबंधित व्याकरणिक प्रश्न होने चाहिए।
- विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता, कल्पना एवं चिंतनपरकता पर आधारित प्रश्न भी हों।
- प्रश्न-अभ्यास ऐसे हों, जिससे संपूर्ण पाठ की पुनरावृत्ति हो सके।
- दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों की संख्या अधिक नहीं होनी चाहिए।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या अधिक होनी चाहिए।
- प्रश्नाभ्यास कक्षा में ही कराए जाएँ।
- प्रश्न ऐसे हों जो पाठ की मूल धारणा को स्पष्ट करने में सहायक हों।
- कवि अथवा लेखक परिचय एवं हिंदी साहित्य के इतिहास से प्रश्न अवश्य होने चाहिए।

हिंदी भाषा साहित्य के मूल्यांकन संबंधी सुझाव

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 मूल्यांकन की रणनीति को नए सिरे से परिभाषित करता है। मूल्यांकन सिर्फ़ सत्र के अंत में की जाने वाली परीक्षा या उससे निकलने वाला परिणाम नहीं है। मूल्यांकन सतत एवं व्यापक प्रक्रिया है, जब विद्यार्थी विद्यालय

© NCERT not to be republished

में प्रवेश लेता है और जब वह विद्यालय छोड़ता है, के बीच एक सतत क्रिया-व्यवहार है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी कक्षा में नियमित आ रहा है या नहीं, समय पर आता है या नहीं। पहले से पढ़ा हुआ अथवा अर्जित किया हुआ ज्ञान उसके पास है या सब भूल गया है, कक्षा में शारीरिक-मानसिक रूप से सक्रिय है या नहीं, कक्षा की गतिविधियों अथवा क्रियाकलापों में भाग लेता है या नहीं। जिज्ञासु या जानने का कौतूहल है या नहीं। प्रश्न पूछता है या प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करता है या नहीं। भाषा के सभी कौशलों में उसकी प्रगति है या नहीं। प्रश्नों का जवाब ढूँढते हुए समाज और परिवेश से जोड़ता है या नहीं। दोस्तों द्वारा किए गए कामों पर अपने मत स्पष्ट कर पाता है या नहीं, सही अथवा गलत के अंतर को समझता है या नहीं, निर्णय लेने की क्षमता है या नहीं इत्यादि बिंदु मूल्यांकन के अंतर्गत आ सकते हैं। क्या भाषा साहित्य का मूल्यांकन रचनावादी या सृजन करने की प्रेरणा देता है या नहीं? प्रमुख बात यह है कि मूल्यांकन में रटंत प्रणाली पर लगाम लगाने की कोशिश हुई, किंतु क्या वास्तव में ज़मीनी स्तर पर परिलक्षित हो रहा है या नहीं, इस संबंध में शिक्षकों द्वारा प्रदत्त भाषा साहित्य के मूल्यांकन संबंधी सुझाव इस प्रकार हैं—

- मूल्यांकन रटंत विद्या पर आधारित नहीं होना चाहिए, बल्कि मूल्यांकन विद्यार्थी के अंदर तार्किकता, समय एवं चिंतनशीलता को विकसित करने वाला होना चाहिए।
- मूल्यांकन के प्रश्न रैखिक उत्तर वाले नहीं होने चाहिए, वरन् संभावनापूर्ण एवं मुक्तांत (ओपन एंडेड) वाले होने चाहिए।
- मूल्यांकन के प्रश्न अधिकतर अंतर विषयवर्ती होने चाहिए, जिनके माध्यम से ज्ञान के रचनात्मक उपागम को विकसित किया जा सके।
- चूँकि साहित्य कलात्मक, सृजनात्मक एवं रुचिकर होना चाहिए, इसलिए मूल्यांकन की एक कसौटी यह भी होनी चाहिए।
- विद्यार्थियों की मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति को समेकित रूप में मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न टूल्स तैयार किए जाने चाहिए।
- मूल्यांकन ऐसा हो जो पक्षपात एवं अन्याय रहित हो, प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा लिखित उत्तरों का सही-सही मूल्यांकन हो।
- हिंदी भाषा साहित्य के मूल्यांकन के लिए कविता पाठ, कहानी लेखन, निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, शब्द बनाओ, व्याकरण, गीत लेखन आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जा सकता है।
- साहित्यिक स्थलों की यात्रा करवाकर यात्रा वृत्तांत या डायरी लेखन भी मूल्यांकन का एक माध्यम हो सकता है।
- विद्यार्थियों की मौलिकता को विशेष महत्व दिया जाए।
- अभिव्यक्ति के आधार पर भी अंक दिए जाएँ।
- बिंदुवार एवं सटीक उत्तरों को प्रमुखता दी जाए।
- श्रवण, ग्रहण, पठन, वाचन, लेखन, वातावरण, जागरूकता, चिंतन, कल्पना, सृजनात्मकता, सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर विषय ज्ञान और उसकी दक्षता का मूल्यांकन किया जाए।
- मूल्यांकन के लिए सभी प्रकार के प्रश्नों, जैसे— (बहुविकल्पीय, अतिलघुत्तरीय, लघुत्तरीय, दीर्घउत्तरीय, आदि) दिए जाएँ।

© NCERT not to be republished

- मूल्यांकन विश्वसनीय होना चाहिए।
- कक्षा में प्रश्न पूछकर, वाद-विवाद कराकर भी परीक्षण अथवा मूल्यांकन किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों के आचार-विचार का भी मूल्यांकन हो।
- चरित्र निर्माण एवं नैतिकता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए और इसका भी मूल्यांकन करना चाहिए।
- मूल्यांकन के संबंध में अध्यापकों को दिशा-निर्देश भी दिए जाने चाहिए।
- मूल्यांकन विषयगत एवं उपयोगिता के आधार पर किया जाना चाहिए।
- परीक्षकों को मूल्यांकन हेतु कम उत्तर पुस्तिकाएँ दी जाएँ और मूल्यांकन हेतु पर्याप्त समय दिया जाए।
- मूल्यांकन के बाद विद्यार्थियों को उत्तर पुस्तिकाएँ दिखाई जाएँ।
- मूल्यांकन में परियोजना कार्य भी दिया जाए आदि।

हिंदी अध्ययन-अध्यापन के समय सूचना एवं संचार तकनीक (आई.सी.टी.) के उपयोग संबंधी सुझाव

सूचना क्रांति ने पूरी दुनिया को विश्व ग्राम में बदल दिया है, तब से दुनिया को देखने का नज़रिया भी बदल गया है। ज्ञान और सूचनाओं का अंबार लगा हुआ है, किंतु क्या अपने काम का है और क्या नहीं? यह विवेक पैदा करना होगा। अब भाषा शिक्षण मौखिक व्याख्यान या ब्लैक बोर्ड पर ही सिमट कर नहीं रह गया है। सूचना एवं संचार तकनीक ने इसके स्वरूप को भी बदल दिया है। अब भाषा एवं साहित्य शिक्षण को दृश्य-श्रव्य माध्यमों, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाइल आदि के माध्यमों ने आसान कर दिया है, इसलिए किसी अवधारणा को समझाने के लिए सिर्फ़ व्याख्या पर्याप्त नहीं है। उस अवधारणा को समझाने के लिए अब दृश्य-श्रव्य सामग्री, ग्राफ़-चार्ट, यू-ट्यूब या इंटरनेट से कोई चित्र, वीडियो इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है, जिससे अवधारणा विशेष को भली-भाँति समझा जा सकता है। अधिकांश अध्यापकों की समस्या है कि किस प्रकार के उपलब्ध संचार साधनों का कक्षा अध्यापन करते समय निर्दिष्ट पाठ के लिए चयन करें और किस प्रकार से दृश्य-श्रव्य एवं ई-कंटेंट विकसित करें— यह चुनौतीपूर्ण है, हालाँकि उसका समुचित उपयोग करने की विधि में अभी भी कौशल की न्यूनता है।

भाषा-साहित्य में भरपूर संभावनाएँ हैं। लेखकों अथवा कवियों पर वृत्तचित्र (डॉक्यूमेंट्री) तथा कविताओं अथवा कहानियों के ऑडियो पाठ तथा वीडियो कार्यक्रम दिखाए जा सकते हैं। जब से इन बिंदुओं के आलोक में शिक्षा दी जा रही है तब से गुणात्मक शिक्षा में वृद्धि हो रही है।

शोधार्थी द्वारा किए गए शोध का निष्कर्ष है कि कक्षा अध्ययन-अध्यापन में आवश्यकतानुसार एवं पाठ्य विषय-वस्तु के अनुसार सूचना एवं संचार तकनीकों को एकीकृत किया जाए। उपयोग किया गया तो ऐसा पाया गया कि अध्ययनकर्ताओं की उपलब्धि स्तर, कौशलों एवं व्यवहार क्षेत्रों में अधिकाधिक परिवर्तन आया है। इस संबंध में शिक्षकों द्वारा दिए गए हिंदी अध्ययन-अध्यापन के समय सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रयोग संबंधी सुझाव इस प्रकार हैं—

- हिंदी भाषा तथा साहित्य शिक्षण के लिए आवश्यक ई-शिक्षण अध्ययन सामग्री का अभाव है। इस कमी को पूरा किया जाना चाहिए।

© NCERT not to be republished

- विद्यालय स्तर पर भाषा प्रयोगशाला की स्थापना की जानी चाहिए ताकि विद्यार्थी के भाषायी कौशलों का विकास किया जा सके।
- विषय विशेषज्ञों के ई-कंटेंट यानी दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि बहुत उपयोगी होंगे, उन्हें विद्यार्थियों को उपलब्ध कराना चाहिए।
- ऐतिहासिक प्रसंगों, प्राकृतिक दृश्यों, सांस्कृतिक धरोहरों, विकास का पर्यावरण पर प्रभाव आदि विषयों को समझाने के लिए तकनीकी का प्रयोग किया जा सकता है।
- सामाजिक विषयों से संबंधित लघु फ़िल्म अथवा वृत्तचित्र भी विद्यार्थियों को समय-समय पर दिखाए जाने चाहिए।
- हिंदी अध्यापन करने वाले अध्यापकों को आधुनिक सूचना एवं संचार तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- अध्यापक को कंप्यूटर का ज्ञान होना चाहिए।
- पीपीटी या प्रोजेक्टर के द्वारा परियोजना कार्य एवं मूल्यपरक प्रश्नों से संबंधित सामग्री को दिखाया जाना चाहिए।
- आशय, व्याख्यान, भावात्मक कौशल, आगमन-निगमन पद्धतियों के साथ-साथ सूचना एवं संचार तकनीक का प्रयोग भी उपयोगी है।
- अध्यापकों को आई.सी.टी. की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए।
- लेखकों अथवा कवियों के चित्र, उनके जीवन की घटनाओं को आई.सी.टी. के माध्यम से दिखाया जाए।
- आई.सी.टी. का प्रयोग विषय को अधिक सुगम एवं रुचिकर बनाता है।
- विद्यार्थियों को ई-डायरी लेखन हेतु प्रोत्साहित किया जाए।
- वेब पोर्टल पर विषय से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराई जाए आदि।

पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता संबंधी सुझाव

गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तक की बहुत सारी विशेषताएँ होती हैं। यह सर्वविदित है कि पाठ्यपुस्तक कक्षा में पढ़ाया जाने वाला प्रमुख साधन है, इसलिए इसका गुणवत्तापूर्ण होना आवश्यक समझा जाता है। गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तक के लिए पाठों का चयन विद्यार्थियों की कक्षा का स्तर, उसकी रुचि, उम्र और योग्यता को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। पाठों के चुनाव के समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वर्तमान दौर किस तरह का है और समाज, राष्ट्र या परिवेश उसमें समाहित है या नहीं। सामाजिक, राष्ट्रीय मुद्दों से उसकी संबद्धता भी आवश्यक है। ऐसा न हो कि सब कुछ आदर्शात्मक हो और वर्तमान या जो भूतकाल में बेहतर था, उसे खारिज कर दिया जाए। भविष्य में क्या बेहतर हो सकता है? उसके लिए क्या आदर्श तय करने हैं? इसका विचार तभी सुनिश्चित हो सकता है जब भूतकाल (अतीत) की बेहतर प्रेरणादायी विकासोन्मुख प्रवृत्तियाँ, विषय, मुद्दे तथा वर्तमान दौर के प्रेरणादायी समाज या राष्ट्र द्वारा स्वीकृत विचार-बिंदु आदि को एक साथ जोड़कर पाठों का निर्धारण किया गया हो। साथ ही शिक्षा को किन नकारात्मक प्रवृत्तियों से बचाना है, उसका भी ध्यान रखना पड़ेगा।

उपयुक्त पाठों का चयन, मूल्य और आदर्श समाज की स्थापना का उद्देश्य, निरंतर विकासोन्मुख प्रवृत्तियों से जुड़े मुद्दे भी पाठ्यपुस्तक के पाठों में पिरोने चाहिए। बहुभाषिकता, सांस्कृतिक बहुलता, सामाजिकता तथा विविधता में एकता का संदेश

© NCERT not to be republished

एवं स्वाधीनता संग्राम से प्रेरणादायी तथ्यों को भी पाठ्यपुस्तक में स्थान मिलना चाहिए, इसलिए पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता के लिए इन उपर्युक्त बिंदुओं का होना आवश्यक माना जाता है।

पाठ्यपुस्तक संबंधी अन्य सुझाव

पाठ्यपुस्तक निर्माण करते समय ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बिंदु, जैसे— पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के सदस्यों की विद्यालयी शिक्षा में योग्यता एवं व्यापक अनुभव; लक्षित समूह के विद्यार्थियों से विचार प्राप्त करना; तथा पाठ्यपुस्तक को अंतिम रूप देने से पूर्व पाठ्यपुस्तक का लक्षित समूह के विद्यार्थियों पर परीक्षण इत्यादि विचारणीय हो सकते हैं, जो पाठ्यपुस्तक निर्माण करते समय ध्यान दिए जाने चाहिए।

शिक्षा को समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से तैयार किया जाना अत्यंत आवश्यक है, इसीलिए शिक्षा को कौशलों से जोड़ने पर बल दिया जा रहा है, व्यावसायिक शिक्षा की माँग बढ़ रही है। भाषा-साहित्य की पाठ्यपुस्तक या शिक्षा समाज और राष्ट्र की जनता को जागरूक करने के उद्देश्य से ही तैयार की जानी चाहिए। इस संबंध में शिक्षकों अथवा शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा दिए गए पाठ्यपुस्तकों में गुणवत्ता संबंधी सुझाव इस प्रकार हैं—

- पाठ्यपुस्तक में विभिन्न जीवन-दृष्टियों से जुड़े पाठ होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में केवल साहित्यिक जड़ता की दृष्टि सें जुड़े पाठ नहीं होने चाहिए, वरन् इतिहास, पर्यावरण, अर्थतंत्र, विज्ञान आदि के साहित्यिक पाठ भी होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में विविध साहित्यिक विधाओं से जुड़े पाठ होने चाहिए तथा उनका अनुपात भी उचित होना चाहिए।
- छोटी और मध्यम आकार की उम्दा रचनाएँ रखी जाएँ।
- रचनाकार के नाम पर नहीं, रचनाओं की गुणवत्ता पर पाठों का चयन हो।
- पाठ्यपुस्तक निर्माण का उद्देश्य पहले से स्पष्ट हो और उन उद्देश्यों के अनुरूप योजनाबद्ध ढंग से शोध कर पाठों का चयन हो।
- अन्य भारतीय भाषाओं की रचनाएँ भी शामिल की जानी चाहिए।
- अतिबौद्धिक रचनाओं के स्थान पर संप्रेषणीय और कलात्मक रचनाओं को वरीयता प्रदान करनी चाहिए।
- पाठ बोल-चाल की भाषा के करीब होना चाहिए।
- पाठ अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने वाला होना चाहिए।
- पाठ राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक, जेंडर, क्षेत्र आदि के स्तर पर सद्भाव उत्पन्न करने वाले होने चाहिए।
- पाठ विद्यार्थियों के मानसिक दशा के अनुकूल भावात्मक, चारित्रिक व तार्किक विकास करने वाले हों।
- एक ही पाठ बहुत सारे उद्देश्यों को पूरा करता हो।
- सभी पाठों का राष्ट्रीय स्तर पर महत्व हो।
- पाठ्यपुस्तक की सामग्री समयानुकूल होनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक का मुख पृष्ठ आकर्षक, उद्देश्यपूर्ण, चित्र एवं रंग-योजना से युक्त हो।

© NCERT not to be republished

- पाठ्यपुस्तकें नैतिक, सामाजिक जीवन एवं मानवीय मूल्यों का विकास करने में सहायक हों।
- पाठ्यवस्तु विविध विधाओं से युक्त भाषायी कौशलों का विकास करने में सहायक हो।
- शिक्षाप्रद कहानियाँ अधिक हों ताकि विद्यार्थी महापुरुषों का व्यक्तित्व जीवन में उतार सकें।
- शब्दों का चयन एवं भाषा के गठन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
- रोज़गार को केंद्र में रखकर पाठ्यपुस्तक तैयार करनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक जीवन जीने के सही तरीके सिखाती हों।
- पाठ्यपुस्तक में समाहित रचनाएँ विद्यार्थियों में भाषा एवं संस्कृति प्रेम, राष्ट्र प्रेम व विश्व बंधुत्व की भावना उत्पन्न कर सकें।
- पाठ्यपुस्तक में समसामयिक रचनाओं का समावेश करते रहना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक का आकार, कागज़ और छपाई की गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिए।
- वैज्ञानिकता को बढ़ावा देने वाले पाठ होने चाहिए।
- प्राचीनता एवं आधुनिकता का समग्र चित्र उपस्थित करने वाले पाठ पाठ्यपुस्तक में शामिल किए जाएँ।
- पाठ्यपुस्तकों को अधिकतम आकर्षक और रुचिकर एवं बाल-केंद्रित बनाया जाए।
- भाषा साहित्य को भी वैज्ञानिक विषयों की तरह पढ़ाने का कुछ आग्रह होना आवश्यक है, जिसके तहत भाषा-प्रयोगशाला आदि की स्थापना की जाए।
- हिंदी साहित्य का इतिहास पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।
- पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तक का हर पाँच वर्ष बाद नियमित समीक्षा एवं विश्लेषण हो।
- पूरे भारत का एक पाठ्यक्रम, जिसमें क्षेत्रीय विविधता मौजूद हो और समान रूप से सभी विद्यालयों में लागू हो।
- तकनीकी गतिविधियों को भी पाठ्यपुस्तक में रेखांकित किया जाना चाहिए।
- सृजनात्मक पाठों को वरीयता दी जाए।
- मौलिक गुणों का विकास करने वाले पाठ समाहित किए जाएँ।
- पुस्तक निर्माण समिति में शिक्षकों की पर्याप्त भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
- पाठ्यपुस्तक में स्थानीय शब्दों और अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषा के प्रचलित शब्दों को ही लेना चाहिए।
- हिंदी में आई.सी.टी. का प्रयोग हो तथा प्रत्येक विद्यालय में एक प्रयोगशाला अवश्य होनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक की सामग्री मानवीय मूल्यों का विकास करने में पूर्णता से सक्षम हो।
- हिंदी शिक्षण, साहित्य एवं ज्ञान के मानकों पर चलकर अन्य विषयों से अंतर्संबंधित हो।
- हिंदी शिक्षण में रचनात्मकता, गतिशीलता, वैज्ञानिकता एवं मानवता को सर्वोच्च स्थान मिले।

© NCERT not to be republished

माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक निर्माण तथा हिंदी शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता वृद्धि संबंधी विद्यार्थियों के सुझाव

उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के 60 विद्यालयों (जिनमें 12 केंद्रीय विद्यालय, 24 राज्य बोर्ड के विद्यालय, 12 वित्तपोषित विद्यालय और 12 निजी विद्यालय शामिल हैं।) के 12वीं कक्षा के मध्य प्रदेश से 263 विद्यार्थी, उत्तर प्रदेश से 191 विद्यार्थी, केंद्रीय विद्यालय से 94 विद्यार्थी तथा मध्य प्रदेश से 10वीं कक्षा के 210 विद्यार्थी, उत्तर प्रदेश से 167 एवं केंद्रीय विद्यालय से 109 (कुल 1034) विद्यार्थियों से पाठ्यपुस्तक निर्माण तथा कक्षा में हिंदी अध्यापन संबंधी सुझाव लिए गए। प्रत्येक विद्यालय के कुल 20 विद्यार्थियों से यादृच्छिक रूप से प्रश्नावली भरवाई गई। प्रश्नावली भरवाते समय 10वीं एवं 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को एक साथ बैठाया गया। उनसे कहा गया कि आप जिस कक्षा में अध्ययन कर रहे हैं, प्रश्नावली में उसी कक्षा से संबंधित विवरण भरें। मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के संयुक्त विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सुझाव स्तरवार इस प्रकार हैं—

विद्यार्थियों के पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी सुझाव (कक्षा 10)

- पुस्तक का मुख पृष्ठ आकर्षक होना चाहिए। यदि संभव हो तो बच्चों द्वारा निर्मित चित्रों को भी स्थान दिया जाए। पुस्तक की बाइंडिंग मज़बूत होनी चाहिए।
- चित्रों का पर्याप्त एवं विषय-वस्तु के अनुकूल प्रयोग किया जाना चाहिए।
- कविताओं के सार संक्षेप तथा काव्य सौंदर्य को उचित स्थान मिले।
- पाठों के चयन में भारतीय एवं विदेशी साहित्य को उचित स्थान मिले। पाठ प्रेरणादायक एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित होने चाहिए।
- पाठों में सांस्कृतिक व धार्मिक क्रियाओं को समुचित स्थान मिलना चाहिए।
- व्याकरण की समझ हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। प्रश्न बोधगम्य रूप में प्रस्तुत किए जाने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में अभ्यास प्रश्नों के उत्तर भी समुचित स्थान पर दिए जाने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक की शब्दावली व शब्द ज्ञानवर्द्धन में सहायक होने चाहिए।
- डिजिटल बुक बनाई जानी चाहिए, जिससे बच्चों का ज्ञानार्जन सुगम तथा रुचिकर हो आदि।

विद्यार्थियों के लिए कक्षा में हिंदी अध्यापन संबंधी सुझाव (कक्षा 10)

- हिंदी पढ़ाते समय हिंदी के इतिहास से भी परिचय कराया जाना चाहिए।
- पाठों के पढ़ाने में रोचकता लाई जानी चाहिए। इसके लिए कविताओं के सस्वर पाठ, नाटकों का मंचन, उच्चारण शुद्धीकरण, वर्तनी शुद्धीकरण, प्रश्नोत्तर जैसी अध्यापन विधि को महत्व दिया जाना चाहिए।
- व्याकरण पर ध्यान देने के साथ-साथ इसकी प्रस्तुति भी सरल रूप में की जानी चाहिए।
- विद्यार्थियों के शैक्षिक लाभ के लिए पाठों को एक-दूसरे से जोड़ा जाए, पुनरावृत्ति के पर्याप्त

© NCERT not to be republished

अवसर हों, सप्ताह में एक दिन अभ्यास कराया जाए। संचार साधनों (आई.सी.टी.) का भरपूर प्रयोग किया जाए। पढ़ाई में पिछड़े बच्चों के सहायतार्थ अतिरिक्त कक्षाएँ लगाई जाएँ।

- भाषा शिक्षण के माध्यम से नैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों के विकास पर बल दिया जाए।
- कभी-कभी विद्यार्थियों को शिक्षक की भूमिका-निर्वाह के अवसर दिए जाएँ आदि।

पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी विद्यार्थियों के सुझाव (कक्षा 12)

- गद्य, पद्य, कहानी, नाटक आदि का संतुलित प्रयोग होना चाहिए। कठिन की अपेक्षा लोकप्रिय कविताओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। घनानंद, केशवदास और अज्ञेय के विकल्प खोजे जाएँ।
- पाठों के चयन में भाषा की सरलता, दैनिक जीवन में उपयोगिता, संवेदना विकास पर समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, मुंशी प्रेमचंद के साहित्य का चयन कर सकते हैं।
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रेरणास्पद और सांस्कृतिक मूल्यों से सराबोर पाठ चयनित किए जाने चाहिए।
- आधुनिक कविताओं तथा नई तकनीकी को पाठ्यपुस्तक में उचित स्थान मिलना चाहिए। नए कवियों और लेखकों को भी स्थान मिलना चाहिए।
- यदि संभव हो तो व्याकरण के लिए अलग से पुस्तक होनी चाहिए।
- महत्वपूर्ण प्रश्नों, विशेषत: व्याकरण से संबंधित प्रश्नों के उत्तर भी दिए जाने चाहिए।
- भारतीय साहित्यकारों और महापुरुषों का समुचित परिचय कराकर उपयोगिता बढ़ाई जा सकती है आदि।

कक्षा में हिंदी अध्यापन संबंधी विद्यार्थियों के सुझाव (कक्षा 12)

- हिंदी भाषा को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए।
- पाठों को पढ़ाते समय सामान्य जीवन से संदर्भ लेकर जीवनोपयोगी ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए।
- कवियों और लेखकों के बारे में पर्याप्त जानकारी दी जानी चाहिए।
- कविताओं को पढ़ाते समय, बोधगम्यता और निहितार्थ ग्रहण पर ध्यान देना चाहिए।
- दृश्य-श्रव्य सामग्री और संचार प्रौद्योगिकी (आई. सी. टी.) का समुचित प्रयोग किया जाना चाहिए।
- भाषा सौंदर्य, सराहना एवं नैतिक मूल्यों के विकास पर समुचित बल दिया जाना चाहिए।
- गृहकार्य सीमित तथा भाषिक विकास पर बल देने वाला होना चाहिए।
- अभिव्यक्ति विकास (लिखित एवं मौखिक) दोनों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए आदि।

उपसंहार

इस गुणात्मक शोध परियोजना के विश्लेषण के आधार पर दिए गए व्यापक सुझाव हिंदी पाठ्यपुस्तकों के निर्माण एवं हिंदी अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता वृद्धि में योगदान देंगे, जो न केवल मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए उपयोगी होंगे। यह सुझाव पाठ्यपुस्तक निर्माण करने वाले संस्थानों एवं इस प्रक्रिया में योगदान देने वाले

© NCERT not to be republished

समस्त पणधारकों को पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में ज़रूर योगदान देंगे। साथ ही, हिंदी अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता वृद्धि में शिक्षकों एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों का भी मार्गदर्शन करेंगे। इन सुझावों से शिक्षा के अंतिम हितधारी विद्यार्थियों को भी हिंदी भाषा सीखने-सिखाने, कौशल प्राप्त करने तथा आवश्यक क्षमताओं का विकास करने में मदद मिलेगी।

संदर्भ

ऑलराइट, एल. आर. 1981. व्हाट डू वी वांट टीचिंग मैटेरियल्स फॉर? *ई. एल. टी. जर्नल.* 36.1 पृष्ठ संख्या 5–18.

राष्ट्रीय शैक्षिक आनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र.* रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

लिटिलजॉन, जी. 1992. *शैटरिंग द साइलेंस, प्रोफ़ेशनल इंवेस्टर.* मई पृष्ठ संख्या 20–22.

हचिंसन, टी. और ई. टोरेस. 1994. द टेक्स्टबुक एज़ एन एजेंट ऑफ़ चेंज. *ई. एल. टी. जर्नल.* 48. पृष्ठ संख्या 315–328.

© NCERT not to be republished